

## माँ के त्याग

ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौंदर्य दुई थी।  
नन्ही-सी आँखें और मुड़ी हुई उंगलियाँ थी।  
ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौंदर्य दुई थी।

नन्हे से शरीर पर नया कपड़ा पहनाती थी।  
घर में खाने के लाले थे पर फिर भी एक-ही में पैसा जोड़ा  
करती थी।  
उसके खुद के सपने अधूरे थे पर फिर भी मेरे सपने  
बुन रही थी।  
ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौंदर्य दुई थी।

वक्त कटा, साल बढ़ा पर तब भी सब अनजान था  
लेकिन मैं फिर भी उसकी जान थी।  
विस्तर को गीला करना दो या रातों को दोना, एक माँ  
ही थी जिसे देना मैंने उसका सूकन था।  
ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौंदर्य दुई थी।

माँ तो दीड़ी अन्नी मुँह से 'मा' भी नहीं निकला था, पर  
वो मेरे बिना कुछ कहे ही सब कुछ समझ जाती थी।  
मैं सूकन से सी सँकू इसलिए वो पूरी रात एक करवट  
में बिताती थी।

ये बात तब की थी, जब दुनिया मेरे लिए सौंदर्य दुई थी।

पर वो वचपन शायद अब सी चुका था और मैं  
जवानी की दहलीज पर कदम रख चुकी थी।  
उसकी क़िस्ती को उसका फल समझने लगी थी

फिर चाहे तो बिना पंखे के सीता ही या मेरी हर ज़िद के आखिरी झुकना।

पर आज जब मैं खुद एक माँ बन चुकी हूँ, एक ज़ख्म मेरे अंदर उमड़ने लगा जिसे कल तक मैं अनजान थी कि क्या गूँझटी होगी माँ पर जब मैंने उसे देख कर भी अनदेखा कर दिया।

ये समझ आने लगा की माँ जग-जननी है जिसे ना ही शब्दों में बूना जा सकता है और ना ही कलम से कागज़ पर उतारा जा सकता है।